शब्द–ब्रह्म
प्रवेशांक ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2012

शिक्षा में स्वायत्तता की संत विनोबा की अवधारणा

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज, इंदौर, मध्यप्रदेश

शिक्षा के प्रश्न पर तुरंत ध्यान देना आवश्यक हो गया है। आज देश में यदि किसी एक पद्धति के लिए सर्वाधिक असंतोष है तो वह वर्तमान शिक्षा पद्धति है। यही कारण है कि इस समय शिक्षा में बदलाव की मांग उठ रही है। उत्तम शिक्षण की यही कसौटी है कि युवकों में अपना भावी जीवन विवेकपूर्वक चुनने की क्षमता उत्पन्न हो। 'समग्र नयी तालीमः विचार, दर्शन, योजना एवं पाठ्यक्रम' में शिवदत्त उच्च शिक्षा के बारे में महात्मा गांधी के विचारों को उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि, "हमारे कालेजों में साहित्य की जो इतनी सारी तथाकथित शिक्षा दी जाती है, वह सब बिलकुल व्यर्थ है और इसका परिणाम शिक्षित वर्गों की बेकारी के रूप में हमारे सामने आया है, यही नहीं, बल्कि जिन लड़के-लड़कियों को हमारे कालेजों की चक्की में पिसाने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है, उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी उसने चौपट कर दिया है। विदेशी भाषा के माध्यम ने, जिसके जरिये भारत में उच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्र को हद से ज्यादा बौद्धिक और नैतिक आघात पहुंचाया है।"1

उच्च शिक्षा का व्यय सरकार वहन करे गांधीजी इसके खिलाफ हैं। उनका स्पष्ट मानना था कि, "विश्वविद्यालयों को स्वावलंबी बनाना चाहिए।"2 शिक्षा के बारे में चिंतन करने का काम सरकार का नहीं समाज का होना चाहिए। राष्ट्र की जरूरतों के मुताबिक ही शिक्षण कार्य होना चाहिए। महात्मा गांधी इस बारे में कहते हैं कि, "विभिन्न प्रकार की इंजीनियरिंग की शिक्षा के कालेजों को चलाने की जिम्मेदारी संबंधित उद्योग उठायें, कृषि कालेजों को सीधे स्वावलंबी खेती से सम्बद्ध किया जाना चाहिए और धनिक लोग इसका खर्च उठायें। कालेज तथा उच्च शिक्षा देने का काम सरकार का नहीं है। इसके लिए व्यक्तिगत व संस्थागत प्रयास किए जाने चाहिए।"3

भारत में पिछले सौ सालों में हरएक चिंतक-विचारक ने शिक्षा के प्रति असमाधान प्रकट किया है। इतना ही नहीं स्वतंत्रता के बाद हर राष्ट्रपति और हर प्रधानमंत्री ने तीव्र असमाधान प्रकट किया है। फिर भी शिक्षा का वही पुराना स्वरूप ज्यों-का-त्यों चला है। विनोबाजी तो मानते थे कि 15 अगस्त 1947 को जैसे झंडा बदला वैसे ही शिक्षा भी तुरंत बदलनी चाहिए। शिक्षा की स्वतंत्रता के बारे में संत विनोबा लिखते हैं, "यहां की तालीम की विशेषता यह थी कि यहां शिक्षण हमेशा स्वतंत्र रहा। विचार की आजादी जितनी भारत में है, उतनी कहीं नहीं देखी।..... कृष्ण के पिता वसुदेव राजा थे, लेकिन उनके राज्य में कैसी तालीम दी जाये, इसके बारे में निर्णय करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं था। शिक्षा का निर्णय आचार्य सांदीपनि करते थे। यही हमारे देश का रिवाज था।"4

भारत को किसी राजसत्ता ने नहीं बनाया है। उसे तो यहां के संत, फकीर और आचार्यों ने बनाया

है। प्राचीनकाल से आज तक जो भारत बना है वह शिक्षकों ने ही बनाया है। यहां आचार्य शंकर, आचार्य रामानुज और कितने ही आचार्य ऐसे हो गए, जिनके नाम तक लोगों को मालूम नहीं। शास्त्रों में उनके नाम प्रसिद्ध हैं। अनेक राज्य सत्ताएं आई और चली गयीं, परंतु इनके नाम अभी तक कायम हैं। आचार्यों ने जो भारत का समाज बनाया, वही परंपरा के अनुसार आज भी चल रहा है। भारत पर स्थायी असर राजाओं का नहीं आचार्यों का ही है।

शासनमुक्त शिक्षण

अंग्रेजी राज के आगमन के साथ भारत में शिक्षण व्यवस्था सरकार के हाथ में चली गयी। आजादी के बाद भी हमने उसे स्वायत्तता प्रदान नहीं की। इस बारे में विनोबा लिखते हैं, "आजकल दुनिया में तालीम विभाग सरकार के हाथ में आया है। जो सिखाया जाता है, वह बच्चे सीखते हैं। इसलिए स्वतंत्र लोकमत नहीं बनता। यह बहुत बड़ा खतरा है कि सरकार जो ढांचा तय करती है, उसी में विद्यार्थियों के दिमाग को ढालने की कोशिश पूरी दुनिया में हो रही है। आज इतिहास भी लिखना है, तो उसका एक ढांचा बनता है। अगर फैसिस्ट सरकार है तो तालीम पर फासिज्म का रंग चढ़ेगा, अगर वेलफेयर स्टेट है तो पंचवार्षिक योजना के गाने सिखाये जायेंगे। जिस रंग की सरकार होगी, उसी रंग की तालीम होगी। अगर इस तरह के ढांचे में बुद्धि ढाली जाये, तो बुद्धि का कोई अर्थ ही नहीं रहता। इसलिए बुद्धि की आजादी होनी चाहिए। और अगर आजादी का किसी को हक है तो सबसे पहले विद्यार्थी को है, क्योंकि हुक्म से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। अतः विद्यार्थियों को ज्ञान ग्रहण करने की पूरी आजादी होनी चाहिए। उनका दिमाग किसी सांचे में नहीं ढलना चाहिए। इसलिए जिसको लिबरल एजुकेशान सामान्य शिक्षण कहते हैं, वह सारा जनता के हाथ में होना चाहिए। तालीम का अधिकार जहां सरकार के हाथ में गया, वहां बहुत बड़ा खतरा समझना चाहिए।"5

विनोबा शिक्षण की स्वायत्तता के प्रबल समर्थक रहे। वे शिक्षा पर सरकार के अधिकार और नियंत्रण को जुल्म ठहराते हैं। लेकिन टेक्निकल शिक्षा या विज्ञान की शिक्षा सरकार द्वारा दी जाये, तो कोई हर्ज नहीं है। उच्च शिक्षा को आज और अधिक बंधनों में जकड़ दिया गया है। स्वतंत्र विचार को आज कोई स्थान नहीं रह गया है। इसका सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए विनोबा लिखते हैं, "आज तो शिक्षण पर सरकार की हुकूमत चलती है और सरकार की तरफ से टाइमटेबल बनाया जाता है। जैसे बैलों से कहा जाता है कि कल अमुक खेत में चने बोये जाएंगे और परसों अमुक खेत में गेहूं बोये जायेंगे। वैसे ही शिक्षकों को कहा जाता है कि हफ्ते में चार दिन हिन्दी सिखायी जाएगी, दो दिन अंग्रेजी सिखायी जायेगी। पुस्तकें भी सरकार की तरफ से नियत होती हैं। जो अधिकार हमने तुलसीदासजी को नहीं दिया था, शंकराचार्य को नहीं दिया था, वह अधिकार आज हमने शिक्षण-विभाग के मंत्रीजी को दे रखा है। आज शिक्षामंत्री जो पुस्तकें तय करेंगे वह हरएक को लाजिमी तौर पर पढ़ना होगा। इससे ज्याद गुलामी हो ही नहीं सकती।"6

"आज लोग भी चाहते हैं कि सरकार शिक्षा का इंतजाम करे। वे सरकार से शिक्षा के प्रबंध की

मांग करते हैं। छोटा-मोट मकान बना देते हैं और बाकी प्रबंध की सरकार से अपेक्षा रखते हैं। शिक्षक सरकार का, शिक्षा पद्धति सरकार की, परीक्षा सरकार की! और अपने प्यारे लड़के उनके हाथों में सौंप देते हैं। होना तो यह चाहिए कि लोग ही शिक्षा-पद्धति तय करें, शिक्षक की व्यवस्था करें, हर साल उसे गांव की ओर से कुछ अनाज मिले, थोड़ी जमीन भी उसे मिले, फिर सरकार से थोड़ी मदद मिले तो पर्याप्त है। लेकिन सरकार का अंकुश न हो।"7

भारत में विद्या कम थी, ऐसा नहीं है। विद्या पर कभी राजाओं की सत्ता नहीं थी। आश्रम चलाने के लिए राजा मदद देते थे। हिंदुस्तान में विद्या अत्यंत स्वतंत्र थी। सरकार निरपेक्ष शिक्षण के कारण ही भारत में इतना विचार स्वातंत्र्य कायम रह सका। विनोबा के अनुसार, " शिक्षा में परिवर्तन की दिशा में सबसे पहले मेरे मन में यह बात आती है, जो मूले कुठार है, मूल पर प्रहार करने वाला है, वह यह है कि शिक्षण सरकारी तंत्र से मुक्त होना चाहिए। शिक्षण पर सरकार का कोई वरदहस्त नहीं होना चाहिए। शिक्षकों को सरकार तनख्वाह जरूर दे, वह सरकार का कर्तव्य है। परंतु जैसे न्याय विभाग स्वतंत्र है और सुप्रीम कोर्ट में सरकार के खिलाफ भी फैसले दिये जा सकते हैं और दिये गये हैं, अगरचे उस न्यायाधिपति को तनख्वाह सरकार से मिलती है। वैसे ही शिक्षण-विभाग भी सरकार से स्वतंत्र होना चाहिए। यह अगर नहीं होगा तो देश के लिए बहुत बड़ा खतरा है।"8

विनोबा शिक्षा में परिवर्तन के लिए बिलकुल क्रांति की बात करते हैं। उन्हें थोड़े-बहुत सुधार से संतोष नहीं है। वे लिखते हैं, "भारत को आजाद हुए कितने साल हो गए, अब उनको सूझता है कि शिक्षण का नवसंस्कार होना चाहिए। इतने सालों में तो दूसरे राष्ट्रों ने क्या-क्या नहीं कर डाला। शिक्षण की पद्धति का संशोधन करने के लिए दो-दो कमीशन बने। डॉ राधाकृष्णन कमीशन की रिपोर्ट सरकार के पास वैसी ही पड़ी है। उसके बाद के कमीशनों की रिपोर्ट भी सरकार में पड़ी हैं, परंतु आज तक शिक्षण के ढांचे में कोई फर्क नहीं हुआ।"9

परंतु शिक्षण-विभाग की स्वायत्तता को सच्चे अर्थ में उपलब्ध एवं कार्यान्वित करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक सत्ता के पीछे न भागकर स्वयं अपनी शक्ति का विकास करे। इसलिए शिक्षकों को पक्ष-सत्ता की राजनीति से मुक्त होकर जनता से संपर्क रखना होगा। अगर शिक्षक ऐसा मानते हों कि स्कूल-कालेज में पढ़ाना ही हमारा धर्म हैं, तो उतने से चलेगा नहीं। वास्तव में ज्ञान क्षेत्र में आजादी होनी चाहिए। जो चीज विचार से हम पसंद करेंगे उसी को स्वीकार करेंगे। दिमाग की आजादी शिक्षा का प्राण है। यदि दिमाग को चारों ओर से बांध लेते हैं तो बुरे हाल हो जाते हैं।

एक अजीब-सी बात है। बोलते हैं कि भारत में शिक्षण की बड़ी समस्या है। हमने कहा, शिक्षण वह चीज है, जिससे सब समस्याओं का हल होता है। लेकिन यहां तो शिक्षण ही समस्या बन गयी!

संक्षेप में शिक्षण में क्रांति के लिए संत विनोबा के मुख्य-मुख्य सुझाव निम्नानुसार हैं :

1 शिक्षण को सरकारी तंत्र से स्वतंत्र बनाना चाहिए।

2 उसका अध्ययन मातृभाषा में होना चाहिए।

3 उसमें दूसरी भाषा का स्थान हो, परंतु वह

लाजिमी तौर पर न हो।
4 उसमें आध्यात्मिक शिक्षण का स्थान हो।
5 उसमें उद्योग को स्थान हो।
6 शिक्षक वानप्रस्थी हो।
जनता का कर्तव्य है कि वह शिक्षण को अपने हाथ में ले।

सन्दर्भ:

1 समग्र नयी तालीम: शिवदत्त, पृष्ठ 14
2 समग्र नयी तालीम: शिवदत्त, पृष्ठ 15
3 समग्र नयी तालीम: शिवदत्त, पृष्ठ 16
4 शिक्षण विचार: विनोबा साहित्य: खण्ड 17: संपादक गौतम, पृष्ठ 4-5
5 शिक्षण विचार: विनोबा साहित्य: खण्ड 17: संपादक गौतम, पृष्ठ 58-59
6 शिक्षण विचार: विनोबा साहित्य: खण्ड 17: संपादक गौतम, पृष्ठ 59
7 शिक्षण विचार: विनोबा साहित्य: खण्ड 17: संपादक गौतम, पृष्ठ 59
8 शिक्षण विचार: विनोबा साहित्य: खण्ड 17: संपादक गौतम, पृष्ठ 103
9 शिक्षण विचार: विनोबा साहित्य: खण्ड 17: संपादक गौतम, पृष्ठ 104